आदिवासी बच्चों को बेचने के मामले पर हंगामा, वाकआउट

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। जशपुर एवं रायगढ़ के आदिवासी बच्चों को दूसरे राज्यों में बेचने के मामले को लेकर विधानसभा में जमकर हंगामा हुआ। गृहमंत्री ने मानव तस्करी के आरोप से इंकार करते हुए कहा कि पुलिस ने सभी मामलों में तत्परता से कार्रवाई की है। गृहमंत्री के जवाब से असंतुष्ट कांग्रेस सदस्यों ने सरकार पर मानव तस्करी के मामले में गंभीर नहीं होने का आरोप लगाते हुए सदन से बहिर्गमन कर दिया।

कांग्रेस सदस्य नंदकुमार पटेल ने रायगढ़ एवं जशपुर जिले के बच्चों को दूसरे प्रदेशों में बेचे जाने का मामला ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि जशपुर जिले के बगीचा थाना क्षेत्र के ग्राम बेंद के पांच बच्चों को एवं ग्राम फूलडीह के दो बच्चों को दलालों द्वारा अधिक कमाई और रोजगार का झांसा देकर दिल्ली में बेच दिया गया। 7 बच्चों को 7 हजार रूपए में बेचने की स्वीकारोक्ति आरोपियों द्वारा की गई है। इन बच्चों को पंजाब ले जाने की कोशिश की जा रही थी। पंजाब जाने से मना करने पर उनको जान से मारने की धमकी दी गई और बलपूर्वक पंजाब जाने वाली ट्रेन में सवार कर दिया गया। बच्चों ने किसी प्रकार अपनी जान बचाकर कुरूक्षेत्र स्टेशन में उतरकर टीटी को अपनी आप बीती सुनाई और रायगढ़ पहुंचकर घटना की जानकारी अपने अभिभावकों को दी। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि आदिवासी बालाओं को नौकरी के नाम पर ले जाने और बेचने की कई घटनाएं सामने आ चुकी है। इन मामलों में सरकार कार्रवाई करने में पूरी तरह विफल रही है।

संसदीय सचिव विजय बघेल ने अपने जवाब में इस बात से इंकार किया कि ग्राम बेंद और फूलडीह के 7 बच्चों को दिल्ली में बेच दिया गया। उन्होंने कहा कि आरोपी प्रदीप गुप्ता एवं बसंत लोहार 10 लड़कों को लेकर दिल्ली गए थे वहां से इन बच्चों को अच्छे काम का लालच देकर दिल्ली से पंजाब ले जाया जा रहा था। कुरूक्षेत्र में उक्त लड़के चकमा देकर भाग निकले। लड़कों को उनके वारिसानों के सुपुर्द किया गया। उन्होंने बच्चों के बेचने के आरोप से इंकार किया। श्री पटेल के पूरक प्रश्नों के जवाब में संसदीय सचिव ने कहा कि प्लेसमेंट कंपनी के माध्यम से बच्चे वहां ले जाए गए थे। श्री पटेल ने पूछा कि दिल्ली में जिस मुकेश अग्रवाल के यहां से एक बच्चे को छुड़ाया गया उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की गई। विपक्षी सदस्यों ने आरोप लगाया कि लगातार बच्चों को बेचा जा रहा है लेकिन सरकार कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। गृहमंत्री श्री कंवर ने कहा कि न तो वहां मानव तस्करी हो रही है और न तो बच्चों को बेचा गया है ज्यादातर बच्चे स्वयं काम करने जाते हैं और इसमें उनके पालकों की सहमति होती है। बच्चों से बात नहीं होने पर ही रिपोर्ट दर्ज कराई जाती है। इस पर विपक्षी सदस्यों ने कड़ी आपत्ति की। नेता प्रतिपक्ष रविन्द्र चौबे और दूसरे सदस्यों ने सरकार पर इस मामले में गंभीर नहीं होने के आरोप लगाए और गृहमंत्री के जवाब से असंतुष्ट होकर सदन से बहिर्गमन कर दिया।

किसानों के करोड़ों के सागौन की अवैध कटाई?

जोगी के सवाल पर मंत्री ने कहा परीक्षण कराएंगे

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। विधानसभा में वनों की अवैध कटाई का मामला उठा। पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने आरोप लगाया कि राज्य में वनों की कटाई के साथ किसानों की जमीन पर लगे सागौन के पेड़ों की भी अंधाधुंध कटाई हुई है। उन्होंने दावा किया कि करीब 50 करोड़ से अधिक के सागौन के वृक्ष काटे गए हैं। वन मंत्री विक्रम उसेंडी ने कहा कि किसानों के पेड़ काटे जाने का मामला सामने नहीं आया है। वे इस मामले का परीक्षण करवाएंगें।

कांग्रेस विधायक श्री जोगी ने सवाल उठाया कि दक्षिण बस्तर के सुकमा वनमंडल में अवैध कटाई के कितने मामले दर्ज किए गए हैं। इन मामलों में कितने लोगों के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

मंत्री श्री उसेंडी ने बताया कि 2 सालों में सुकमा वनमंडल के अंतर्गत अवैध कटाई के 164 मामले दर्ज किए गए और 97 लोगों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। श्री जोगी ने कहा कि 164 मामलों में 97 लोगों के खिलाफ ही कार्रवाई क्यों की गई। बाकी आरोपियों को क्यों नहीं पकड़ा गया। उन्होंने यह भी दावा किया कि दक्षिण बस्तर जिले में सरकारी वनों की कटाई के साथ किसानों के पेड़ भी काटे गए हैं। वनों का पूरा सफाया कर दिया गया है। उनके इस बात की जानकारी है कि करीब 4-5 हजार किसानों की जमीन पर लगे सागौन के वृक्षों की कटाई की गई है।

मंत्री ने माना कि दंतेवाड़ा जिले में अवैध वन कटाई के मामले बढ़ रहे हैं। लेकिन किसानों के पेड़ काटे जाने की जानकारी होने से इंकार किया। उन्होंने कहा कि जिन गांवों में कटाई हुई है उन गांवों में कटाई के लिए विधिवत अनुमति लेने के बारे में परीक्षण करवाया जाएगा।

श्री जोगी ने कहा कि लकड़ी का अवैध परिवहन करने वाले दो ट्रकों को जब्त किया गया था। लेकिन ट्रक को राजसात करने की कार्रवाई नहीं की गई है। मंत्री ने बताया कि एक ट्रक को राजसात कर लिया गया दूसरे ट्रक को राजसात करने के लिए प्रक्रिया चल रही है।

श्री जोगी ने कहा कि ट्रक को राजसात करने के लिए डेढ़ साल से प्रक्रिया चल रही है। इसमें इतना अधिक समय क्यों लग रहा है। कांग्रेस विधायक कवासी लखमा ने चर्चा के दौरान कहा कि दंतेवाड़ा जिले में वनमंडलाधिकारी की वजह से अवैध कटाई के मामले बढ़ रहे हैं। वे पिछले डेढ़ साल से इसी क्षेत्र में पदस्थ है। मंत्री ने कहा कि किसानों के पेड़ कटाई और वनमंडलाधिकारी के कार्यों का परीक्षण करवाएंगे।

अगले सत्र से पहले स्कूलों के 75 फीसदी पदों पर भर्ती : बृजमोहन

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। स्कूलों में शिक्षकों की कमी का मामला आज विधानसभा में उठा। इस मामले में स्कूली शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने जोर देकर कहा कि आगामी शिक्षा सत्र में 75 फीसदी रिक्त पद भर लिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्राचार्यों के पद पर सीमित परीक्षा लेकर पदोन्नति दी जाएगी।

प्रश्नकाल में कांग्रेस सदस्य महंत रामसुंदर दास ने यह मामला उठाया। उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र जैजेपुर में स्कूलों में शिक्षकों की संख्या के बारे में जानकारी चाही। इसके जवाब में श्री अग्रवाल ने बताया कि जैजेपुर, बम्नीडीह और मालखरौदा में कुल 38 स्कूल संचालित हैं। उन्होंने शिक्षकों के रिक्त पदों की कमी का जिक्र किया। इसके जवाब में स्कूल शिक्षा मंत्री ने बताया कि शिक्षकों की रिक्त पदों पर जल्द भर्ती की जाएगी। उन्होंने कहा कि 75 फीसदी पद अगले शैक्षणिक सत्र से पहले भर लिए जाएंगे। श्री अग्रवाल ने कहा कि जिन स्कूलों में विषयवार शिक्षक नहीं है वहां युक्तियुक्तकरण कर इसकी पूर्ति कर ली जाएगी। उन्होंने बताया कि प्राचार्यों के रिक्त पदों पर सीमित परीक्षा लेकर पदोन्नति दी जाएगी।

मंत्री ने माना- दो साल में 36 जंगली जानवरों के शिकार

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। वन मंत्री विक्रम उसेंडी ने विधानसभा में स्वीकार किया कि पिछले दो वर्षों में 36 वन्य प्राणियों का शिकार हुआ है।

उन्होंने कहा कि शिकार रोकने के लिए अलग सेटअप बनाया गया है और इसमें उच्च स्तर पर भी अधिकारियों की पदस्थापना की गई है। कलेक्टर की अध्यक्षता में जिलों में बनी कमेटियों में जनप्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाएगा।

भाजपा सदस्य देवजी भाई पटेल के प्रश्नों के जवाब में उन्होंने बताया कि वर्ष 2008-09 में 11 एवं 2009-10 में 25 वन्य प्राणियों का शिकार किया गया। इनमें चीतल, कोटरी, बायसन, खरगोश, तेंदुआ, मोर, जंगली मुर्गा आदि शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इसी साल से वन्य प्राणी विंग में चार वन संरक्षक स्तर के अधिकारियों की पदस्थापना की गई है। इसी तरह जिलों में कलेक्टर की अध्यक्षता में कमेटी बनाई गई है। इसमें वनमंडलाधिकारी, रेंजर आदि सदस्य हैं।

कांग्रेस विधायक धरमजीत सिंह ने मांग की कि कमेटी में जनप्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाए और इसकी नियमित बैठक हो। वन मंत्री ने आश्वस्त किया कि जनप्रतिनिधियों को भी कमेटी में शामिल किया जाएगा और इसकी बैठक अब हर एक-दो माह में आयोजित की जाएगी।

करोड़ों होने के बावजूद भूख-प्यास से क्यों मर रहे तेंदुए?

सदन में डीएफओ को निलंबित करने की मांग

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। विधानसभा में गुरुवार को सदस्यों ने सवाल उठाया कि कैम्पा फंड से जो 123 करोड़ रूपए मिले हैं उसमें वन्य प्राणी संरक्षण पर कितनी राशि खर्च की जाएगी। वन मंत्री श्री उसेंडी ने बताया कि इसके लिए 17 करोड़ रूपए रखे गए हैं। इस पर नेता प्रतिपक्ष ने पूछा कि करोड़ों रूपए होने के बावजूद दो तेंदुओं की भूख और प्यास से मौत हो गई। उन्होंने इस मामले में डीएफओ को निलंबित करने की मांग की। वन मंत्री ने आश्वस्त किया कि वे इसे दिखवाएंगे।

बसपा सदस्य सौरभ सिंह ने कैम्पा फंड से राज्य को मिली राशि पर जानकारी मांगी। श्री उसेंडी ने बताया कि 1 जनवरी 2010 तक 123 करोड़ 21 लाख रूपए की राशि प्राप्त हुई है। उन्होंने बताया कि इस राशि क्रोकोडाइल पार्क के लिए राशि नहीं दी गई है लेकिन विभागीय मद से क्रोकोडाइल पार्क के लिए एक करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। पूरक प्रश्नों के जवाब में वनमंत्री ने बताया कि वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए कैम्पा फंड से मिली राशि में से 17 करोड़ रूपए वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए रखे गए हैं।

नेता प्रतिपक्ष रविन्द्र चौबे ने कहा कि 17 करोड़ रूपए होने के बावजूद प्यास और भूख से तेंदुओं की मौत हो रही है। अधिकारी राशि डकार रहे हैं। उन्होंने श्री उसेंडी से पूछा कि क्या वे पंडरिया क्षेत्र में दो तेंदुओं के मरने की जांच कराएंगे और वहां के डीएफओ को निलंबित करेंगे। श्री उसेंडी ने कहा कि वे इसे दिखवाएंगे।

माचिस गोदाम में आग से हड़कंप

आग पर काबू पाने में दो घंटे लगे

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। गुढ़ियारी पड़ाव स्थित माचिस गोदाम में आग लगने से हड़कंप मच गया। फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियों की मदद से आग पर काबू पाया गया। आगजनी में लगभग दो लाख रुपए का नुकसान होना बताया जा रहा है। आग लगने का कारण पता नहीं चल पाया है।

गुढ़ियारी पड़ाव स्थित मित्तल कॉम्पलेक्स की माचिस गोदाम में गुरुवार की दोपहर आग लग गई। घटना की खबर गुढ़ियारी पुलिस और फायर ब्रिगेड को दी गई। फायर ब्रिगेड के पहुंचने तक पूरा गोदाम आग की चपेट में आ गया। आग रह-रहकर भड़क रही थी। आगजनी के कारण पूरे कॉम्पलेक्स में हड़कंप मच गया। फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंची। आग पर काबू पाने पास ही स्थित तालाब के पानी का उपयोग किया गया। करीब दो घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। गोदाम के मालिक निरंजन सचदेव के मुताबिक आगजनी में करीब दो लाख रुपए का नुकसान हुआ है।

आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है। गुढ़ियारी पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बाधाओं से परे रचा सृजन संसार

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। बाधाओं के बावजूद सृजन की लालसा कभी बाधित नहीं होती है। यही कारण है माइल्ड कैटेगरी का बाधित अविनाश जहां पूरी तन्मयता के साथ प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्ति बना लेता है वहीं डॉउन सिन्ड्रोम से ग्रस्त रितिका रंगों का सुंदर संसार रच लेती है।

जयश्री भगवानानी की सहभागिता में 'आकांक्षा' के बच्चों ने इन दिनों एक ऐसी मनभावन दुनिया सजा ली है जहां उनकी कल्पना कहीं से भी बाधित नहीं है।

स्पेशल ओलंपिक में ऊँची कूद में स्वर्ण पदक पाने वाला 26 साल का अविनाश मानसिक बाधा के कारण फिलहाल दूसरी कक्षा में पढ़ रहा है लेकिन पेंटिंग में उसकी खासी रूचि है। रितिका डॉउन सिन्ड्रोम से पीड़ित है लेकिन सिरेमिक दीए, ग्रीटिंग बनाने में वो माहिर है। आकांक्षा की शिक्षिका संगीता नवघरे ने बताया कि अविनाश की 2 पेटिंग शहर के एक हॉस्पिटल में लगी हुई है।

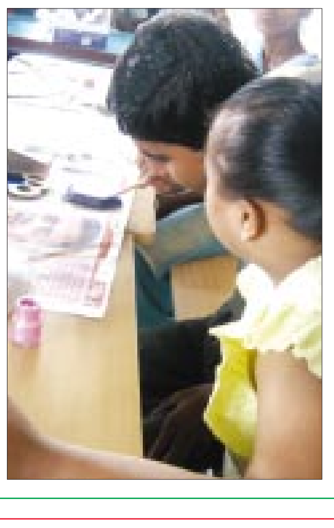

आकांक्षा के बच्चों द्वारा बनाए गए दीयों, ग्रीटिंग कार्ड और पेपर बैग के लिए संस्था को बकायदा आर्डर मिलते रहते हैं। हाल में एक संस्था द्वारा 1000 ग्रीटिंग, हीरा ग्रुप द्वारा 1000 दीए का संस्था को आर्डर मिला था। वैलेन्टाइन डे पर बच्चों द्वारा बनाई सामाग्री की भी अच्छी मांग रही।

एजुकेबल ग्रुप के बच्चे भले ही आम बच्चों की तरह साल दर साल कक्षावार पढ़ाई नहीं कर पाते हैं लेकिन नई चीजों को बनाने में इनकी रुचि रहती है। यही कारण है कि लोकेशनल ट्रेनिंग इनके लिए कारगार रहती है। विगत एक साल से बाधित बच्चों को कला जगत से जोड़ने के लिए प्रयत्नशील जयश्री भगवानानी का मानना है कि छोटे-मोटे हुनर बाधित बच्चों को जहां रचनात्मक दिशा देने में कारगर होते हैं वहीं भविष्य में इनके जीवकोपार्जन के मददगार भी हो सकते हैं।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ दो गिरफ्तार

रायपुर, 18 मार्च। राजिम पुलिस ने बुधवार की रात मोटरसाइकिल चोरी के मामले में दो युवकों को गिरफ्तार कर उनसे वाहन जब्त किया है। युवक मोटर साइकिल बेचने की फिराक में थे इसी बीच पकड़े गए।

बुधवार की रात राजिम में एक चोरी की मोटर साइकिल बेचने की फिराक में घूम रहे बिजली ऑफिस के पास नवापारा निवासी राजेन्द्र कुमार व आदर्श कॉलोनी निवासी विक्की उर्फ ओमकार को संदेह के आधार पर पुलिस ने पकड़कर उनसे पूछताछ की।

पूछताछ में युवकों ने ग्राम पटेवा से विगत एक माह पूर्व उक्त मोटर साइकिल चुराने की बात कबूल ली। युवक नई मोटरसाइकिल पर गलत नंबर लिखकर उसे चला रहे थे। पुलिस ने दोनों युवकों के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज कर उन्हें रिमांड पर जेल भेज दिया है।

रविवि के बाबू ने कई और छात्रों को लगाया चूना

छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 18 मार्च। रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के निलंबित क्लर्क राम खिलावन साहू ने कई और छात्रों को चूना लगाया है। बताया जा रहा है कि बाबू ने इलेक्ट्रानिक्स विभाग के पांच और छात्रों की फीस का पैसा हजम कर दिया है। इस मामले में इलेक्ट्रानिक्स विभाग के अधिकारी लीपापोती की कोशिश कर रहे हैं।

रविवि के इलेक्ट्रानिक्स विभाग के बाबू रामखिलावन ने एम टेक के छात्रों की फीस का हजारों रुपया हजम कर दिया है। सबसे पहले एमटेक के दूसरे सेमेस्टर के 5 छात्रों ने फीस में गड़बड़ी करने की शिकायत की थी। बाबू ने इन छात्रों से 10-10 हजार रुपए लेकर रसीद भी दी थी लेकिन इसे विभाग में जमा नहीं किया। इसका खुलासा उस समय हुआ जब विभागाध्यक्ष की ओर से इन छात्रों को पैसा जमा करने के लिए नोटिस जारी की गई। फीस जमा करने के बावजूद नोटिस से हड़बड़ाए छात्रों ने विभागाध्यक्ष से संपर्क किया तो उन्होंने छात्रों को दोबारा फीस जमा करने के लिए दबाव डाला।

फीस जमा नहीं होने से परेशान छात्रों ने कई बार विभाग के अधिकारियों से चर्चा की। लेकिन मामले को दबाने की कोशिश की गई। छात्रों ने जब पूरे मामले की शिकायत कुलपति डॉ. एस.के. पांडे से की तब गड़बड़ी करने वाले बाबू को निलंबित किया गया। इसके पहले तक विभाग के अधिकारियों ने इसकी जानकारी कुलपति और कुलसचिव तक को नहीं दी थी। इस मामले के उजागर होने के बाद से गायब बाबू के खिलाफ कार्रवाई करने को लेकर भी विभाग के अधिकारी टाल मटोल करते रहे। कुलपति डॉ. पांडे की जानकारी में आने के बाद क्लर्क को निलंबित किया गया और उन्होंने क्लर्क को बचाने की कोशिश कर रहे विभाग के अधिकारियों को जमकर फटकार भी लगाई। कुलपति ने छात्रों को भरोसा दिलाया है कि उन्हें फीस दोबारा जमा नहीं करनी पड़ेगी। जरूरत पड़ने पर बाबू के पीएफ से पैसा निकालकर फीस जमा करने का इंतजाम किया जाएगा।

इस बीच क्लर्क द्वारा कई और छात्रों को चूना लगाने का मामला सामने आ रहा है। बताया गया है कि उसने एमटेक पांचवें सेमेस्टर के छात्रों से भी फीस लेकर जमा नहीं किया है। पांचवें सेमेस्टर के भी करीब 5 छात्रों का 50 हजार रुपए विभाग में जमा नहीं हुआ है।

समस्या हिन्दी की नहीं, हिन्दी के दुकानदारों की है : ऋतुपर्ण

हिन्दी को अवसरों की भाषा बनाना जरूरी

दीपक कुमार पाचपोर

रायपुर, 18 मार्च। प्रसिद्ध साहित्यकार और वर्षों तक विदेशों में हिन्दी का अध्यापन करने वाले डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण हिन्दी पर किसी तरह के संकट से इंकार करते हैं और कहते हैं कि समस्या हिन्दी की नहीं बल्कि हिन्दी के दुकानदारों की है। उनका विचार है कि हिन्दी का महत्व लगातार बढ़ रहा है और आज उसका प्रवेश उन क्षेत्रों में हो रहा है जहां पहले उसकी उपस्थिति कमजोर थी।

हिंदी के प्रमुख साहित्याकारों में से एक गिने जाने वाले और टोक्यो विश्वविद्यालय में करीब एक दशक से हिन्दी के प्रोफेसर ऋतुपर्ण साहित्यिक पत्रिका ऋतुपर्ण और हिन्दी जगत के संपादक भी है। उन्होंने वर्षों तक वेस्ट इंडीज के कुछ देशों में हिन्दी पढ़ाई है। हिन्दी साहित्य संस्थाओं के आमंत्रण पर रायपुर आए श्री ऋतुपर्ण का कहना है कि अगर हिन्दी पर कोई संकट होता तो हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएं लगातार बढ़ क्यों रही है। विदेशी महिला सोनिया गांधी तक को हिन्दी सीखने की जरूरत क्यों पड़ रही है और मायावती, मुलायम हिन्दी में ही क्यों भाषण देते हैं और क्यों प्रणब मुखर्जी जैसे कद्दावर नेता स्वीकार करते हैं कि वे इसलिए इस देश के प्रधानमंत्री नहीं बन सकते क्योंकि उन्हें हिन्दी नहीं आती और क्यों हिन्दी न जानने के कारण एच.डी. देवेगौडा नाकाम प्रधानमंत्री साबित होते हैं।

डॉ. ऋतुपर्ण का कहना है कि अगर इस संकट की परिभाषा यह है कि हिन्दी से जुड़े लोगों को रोजी-रोटी के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते या हिन्दी अवसरों की भाषा नहीं है तो यही कहा जा सकता है कि यह तर्क एक तरह से रक्षा कवच है जिसकी आड़ लेकर भारतीय सहूलियत के अनुसार अंग्रेजी की शरण में चले जाते हैं। जैसे पत्रकारिता की संभावनाओं को देखते हुए उस क्षेत्र में चले जाते परंतु अपनी सुविधा के चलते हिन्दी में बेतहाशा अंग्रेजी के शब्द घुसाकर भाषा को प्रदूषित और भ्रष्ट कर देते हैं तथा यह कहते हैं कि आज की भाषा यही है। उनका कहना है कि यह भाषायी संकट नहीं बल्कि नैतिकता और मानवीय मूल्यों का संकट है। हिन्दी दरअसल लोगों का विश्वास होती जा रही है क्योंकि 1947 के पहले हिन्दी संघर्ष और विरोध की भाषा रही है। आजादी के मिलने के बाद यह वंचितों की भाषा रह गई क्योंकि सत्ताधीशों ने तत्काल अंग्रेजी को अपना लिया। आजादी के पूर्व जिन लोगों ने अंग्रेजी के बजाय हिन्दी को तरजीह दी वे आजादी के पश्चात खुद को ठगे से महसूस करने लगे। इसलिए उन्होंने आजादी के पश्चात खुद को और अपने बच्चों को हिन्दी के बजाय अंग्रेजी को प्रधानता देने के लिए विवश किया। इससे हिन्दी का महत्वपूर्ण कम होता गया।

प्रो. ऋतुपर्ण का कहना है कि सबसे पहले हमें यह मन से निकालना होगा कि हमें अंग्रेजी का विरोध करना है तभी हिन्दी अवसरों की भाषा बनेगी। यह सही है कि अंग्रेजी एक बड़ी भाषा है, विश्व भर में बोली जाती है, समृद्ध भाषा है और समृद्ध साहित्य की भाषा है। परंतु हमें अपने विचारों और भावनाओं के लिए तो अपनी ही भाषा चाहिए और हिन्दी हो सकती है। अंग्रेजी जानना ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि अच्छी अंग्रेजी जानना जरूरी है, वैसे ही जैसे सिर्फ हिन्दी नहीं बल्कि अच्छी हिन्दी जानी जाए। फिराक गोरखपुरी, रामविलास शर्मा, रघुवीर सहाय, गिरिजा कुमार मथुर, अशोक वाजपेयी जैसे अनेक साहित्यकारों ने डिग्रियां चाहे अंग्रेजी में हासिल की हो परंतु उन्होंने लेखन के लिए हिन्दी को चुना। अगर वे अंग्रेजी में लिखते तो शायद ऐसी पहचान नहीं बन पाती। यह सही है कि आज बहुत अच्छी हिन्दी नहीं लिखी और बोली जाती परंतु यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान में कोई बहुत अच्छी अंग्रेजी बोली और लिखी नहीं जाती। जो भारतीय लेखक अंग्रेजी में लिख रहे हैं वह कोई श्रेष्ठ साहित्य नहीं है।

स्लमडॉग मिलेनियर के लेखक या चेतन भगत कोई अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ साहित्य नहीं है। उन्होंने कहा कि आज की श्रेष्ठता का पैमाना बाजार तय करता है जो गलत है। श्रेष्ठता वह है जो हमारे मन और जीवन का बहिष्कार करे, हमें मानवीय मूल्यों से जोड़े, प्रेरणा और ऊर्जा प्रदान करे। प्रेमचंद और निराला का साहित्य जो ऊर्जा हमें देता है वह इन अंग्रेजी लेखकों में नहीं है।

यह पूछने पर कि क्या 1947 और 1977 जैसे दौर में साहित्यकारों ने जो भूमिका निभायी, वैसा करने में आज की साहित्यिक पीढ़ी नाकाम रही है, प्रोफेसर ऋतुपर्ण का विचार था कि पिछले एक-डेढ़ दशक से भारत संक्रमण काल से गुजर रहा है। भूमंडलीयकरण और बाजारवाद ने उसे जिस तरह से झकझोरा है उसके कारण वह भ्रम की स्थिति में है और साहित्यकार भी इस भ्रम से अछूते नहीं है। शायद समाज और देश अपना रास्ता तय नहीं कर पा रहा है, उसका एजेंडा तय नहीं हुआ और भावी पद्धति भी अस्पष्ट है। वह तय नहीं कर पा रहा है कि वह पीजा-बर्गर खाये या रसोई में बैठकर मां की हाथों की गर्मागरम रोटियां खाये। शायद इसके कारण वह ऐसा कालजयी साहित्य नहीं रच पा रहा है जो आजादी के दौरान और जयप्रकाश आंदोलन के दौरान रचा गया था। इसका कारण श्री ऋतुपर्ण के अनुसार यह है कि आज का साहित्यकार अपने मूल कार्य अर्थात लेखन से विमुख होता जा रहा है और रचनात्मकता की बजाय पुरस्कारों और अभिनंदन पर ज्यादा ध्यान दे रहा है। उसे चाहिए कि वह समाज से जुड़े और साहित्य की रचना करे।

दो दशकों से ज्यादा विदेशों में हिन्दी पढ़ाने वाले श्री ऋतुपर्ण के अनुसार भारतीय बहुलता वाले कुछ देशों में हिन्दी की स्थिति ठीक है तो कहीं वह खत्म होती जा रही है। गियाना और ट्रिनीदाद से वह लगभग खत्म हो गई है लेकिन फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस आदि में बड़ी संख्या में अब भी लोग हिन्दी बोलते हैं। लंदन, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका में हिन्दी बोलने बढ़ रहे हैं। इसका कारण है वहां के लोगों में भारतीय संस्कृति की ओर वापसी की इच्छा और अपनी अस्मिता-पहचान को बनाए रखने की आकांक्षा।

(बाकी पेज 9 पर)